PYARA FOUNDATION

Jolom Sini: Kharia Writing System

जोलोम सीनी
खड़िया लिपि

ਦੀਵਿਹਤ ਗਿਰੀ (ਦਸ੍ਰੰਬਰ ੧੯੭੮)

Jolom Sini (Kharia Writing System)

जोलोम सीनी (खड़िया लिपि)

PYARA FOUNDATION

[illegible]

[illegible]

आदिवासी पहचान, टाटा स्टील फाउंडेशन, जमशेदपुर के आर्थिक सहयोग से प्रकाशित

[illegible] - ₹[illegible]

Price : Rs. 20

© [illegible]

[illegible] : [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] - [illegible] / [illegible]

[illegible] - pkfbooks@gmail.com

[illegible] - www.jolomsini.kharia.org

[illegible] - [illegible] ([illegible]), [illegible] ([illegible])

[illegible] - [illegible]

ISBN : 978-93-95175-67-8

———————————————————————————

Jolom Sini (Kharia Writing System) by Vandna Tete and published by Pyara Kerketta Foundation, Ranchi (Jharkhand).

[illegible] ([illegible]) : [illegible]

[illegible]

- [illegible]
- [illegible]
- [illegible]
- [illegible]
- [illegible]
- [illegible]

[illegible]

- [illegible]।

[illegible]?

[illegible]।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

ਰੁਣਰੁਣ ਮਿਸ਼ਦਤ, ਦੀ ਹ੍ਨੇ ਰ੍ਿਟਦ੍| 1010 ਨੇ ਹ੍ਮਿਸ਼ਫ ਬੀਮ ਨੇਕਬੇ ਲਿਖ (ਮਵਸ਼ਾ ਵ੍ਣਨੇਸ਼) ਮਾਸ਼ਜਿਤਮਿਸ਼ਫ ਰਦੇਤ ਕੀ 11 ਟਅਫਵ (ਦ੍ਵਾਟ 1011) ਨੇ ਫਾਸ਼ੀ ਨੇ ਬੀਮ ਕੀਮਵੀਤ ਨੇ ਰੀਵਕੀਬਮੀ| ਹ੍ਦੇਤ ਮੀ ਰਘਮੀ ਲਿਖ ਸ਼ਤ ਮਾਕੀ| ਹ੍ ਅਟਫ ਨੇਸ਼ਾ ਮੇ ਖ਼ਸ਼ਾਫਾ ਮੇਫਮੇਤਤਾ ਡਾਸ਼ੇਕਜਿਕ ਫਾਸ਼ੀ ਨਿਟਦਨੇਸ਼ ਰੀਕੀਤ ਬੀਮ ਨੇਕਬੇ ਲਿਖ 'ਦੀਵੀਣ ਜਿਕੀ' ਰੰਤ ਰੀਵਨੇਟਦ੍ ਵੇ|

ਦੀਵੀਣ ਜਿਕੀ

'ਦੀਵੀਣ' ਸ਼ਤ ਬਕੇ 'ਦੀਵੀਣਕਾ' ਫੀ 'ਜਿਕੀ' ਟਾਫ ਸ਼ਤ ਕੀਣ ਸ਼ਾਬਕੀਬਨੇਾ| ਲਿਖ, ਵਾਣ ਫੀ ਜਿਅਣ ਨੇ ਨੇਕਬੇ ਓਖ ਨੇਫਨੇ| ਦੀਵੀਣਕਾ ਜਿ ਰੀਤ ਨੇਕਬੇ ਵੇਦ੍ਕ ਕ ਮੇਵੀਣ ਮੀਤ ਸ਼ੀਨੇਾ| 'ਜਿਕੀ' ਹ੍ਣ ਟਿਸ਼ਕਾ ਟਾਤਰੁਣ ਵਾਤ ਮੀ ਹ੍ਜਿਵੀਤ ਨੇ ਰਾਜਿਕੀ ਜਿ ਲਿਬਕਾ ਹ੍ਣ ਖਾਵਕੀਬਕਾ ਟਾਤਲਿਣ| ਕਕਿਸ਼ਾ ਵੇਮ੍ ਮੀ ਹ੍ਜਿਵੀਤ ਨੇ ਜਿਕੀ ਮ੍ਣ ਜਿਵੀਤਮੀਬਸ਼ ਫੀ ਮੀਤਕਾ ਕੇਣ ਮਾਤ ਓਬਮ੍ਬ ਮਾਸ਼ੀਮੀ| ਹ੍ ਵੇਦ੍ਕ ਦੀਵੀਣ ਫੀ ਜਿਕੀ ਕਕਿਸ਼ਾ ਕਾਤ ਸ਼ਤ ਬ੍ਵ ਮਾਸ਼ੀਣ ਨੇ ਸ਼ੀਤਸ਼ੀਤ ਰਾਟਦ| ਰੀਕੀ ਹ੍ ਹ੍ਮਫ ਜਿਵ੍ਣ ਲਿਖ ਫੀ ਲਿਬਕਾ ਨੇ ਕਜਿ ਬਕੇ ਨੇਫਨੇਮੀ| ਲਿਖ ਮ੍ਣ ਰਲਿਣ ਜਿਵ੍ਣ ਸ਼ਤ ਕਨੇੀ ਮਫਾਸ਼ਨੇਲਿਣ ਫੀ ਮਾਸ਼ੀਣ, ਮਾਸ਼ੀਣ ਰੀਕਬਕਾ ਫੀ ਮੀਵਮਾਸ਼ੀਬਕਾ ਮ੍ਣ ਟਮ੍ਕ ਮੇਵੀਣ 'ਮਾਤ' ਮ੍ਟਨੇਲਿਣ|

'ਦੀਵੀਣ ਜਿਕੀ' ਮਿਬ ਹ੍ਕਕਾਤ ਰੀਕੀ ਬੀਮ ਮਾਫਕ ਰਾਟਦ-ਜਾਕੀ ਰਾਸ਼ਿਅਘਜਿ ਮਿਸ਼ਤ ਬੀਨੇਮ| ਜਿੰਨੇਵ ਮੀ ਰਕ੍ਮਿਸ਼ਤ ਲਿਖ ਨੇ 'ਰੀਵਸ਼ਿਮਿ', ਟਿ ਮੀ 'ਘਫਣਸ਼ਿਨੇ', ਹ੍ਫਿਘ ਮੀ ਰਕ੍ਮਿਸ਼ਤ ਲਿਖ ਨੇ 'ਨੇਵੀਂਸ਼ਜਿਮਿ' ਸ਼ਾਬੀ ਮੀ| ਲਿਖ ਮਿਸ਼ਤ ਹ੍ ਫਾਸ਼ ਨੇ 'ਦੀਵੀਣ ਜਿਕੀ' ਦੀ ਮਾਸ਼ਮੀਕ ਹ੍ਕਨੇ ਫੀ ਬ੍ਸ਼ਬ ਕੀਕ੍ਨੇ, ਜਾਕੀ ਰਾਸ਼ਿਅਘਜਿ ਮਿਸ਼ਤ ਬੀਨੇਮ ਨੇ ਖਾਕੀਬ ਨੇਫਨੇ|

ਦੀਵੀਣ ਜਿਕੀ ਸ਼ਤ ਰਮਿਫ-ਖਫਮਿਫ

ਦੀਵੀਣ ਜਿਕੀ ਸ਼ਤ ਰਮਿਫ-ਖਫਮਿਫ ਫੀ ਮਾਬ੍ ਰੀਵਕਾ ਨੇ ਹ੍ ਕਕਿਸ਼ਾ ਲਿਖ ਟਮ੍ਕ ਸ਼ਾ ਜਿਟਦ ਰਾਟਦ| ਹ੍ਦੇਤ ਕਕਿਸ਼ਾ ਖਫਅਫਾ ਫੀ ਕਾਤ ਸ਼ਤ ਟਿਜਮ ਮ੍ਣ ਮਸ਼ਕੀਬਜਿ| ਹ੍ਮਕਾ ਰਮਿਫ-ਖਫਮਿਫ ਨੇ ਕਕਿਸ਼ਾ ਕਾਤ ਸ਼ਤ ਮਸ਼ਕੀ ਮਾਸ਼ੀਣ ਸ਼ੀਕਾ| ਦੇਜਸ਼ ਕੀ-

કાનાં ઘરાટ ગાવાર ।ઉત્ર

ઉત્ર ગા ઘરાટ ર્ય ગા ઘરાટ્ય ર્ય ગા ઘરાટ્ય ર્ય ગા ઘરાટ્ય

[illegible] www.jolomsini.kharia.org [illegible]

[illegible]

[illegible]

जोलोम सीनी (खड़िया लिपि) : मोइञ ओब्कोड

खड़िया लाङ

- सिरिसटी याः उम ओबकोङ याः पहिला डिकोडिंग
- परकिरति याः साड़ा कियाः मोञ इकुड बारू तिंजाः
- जिनगी याः आलोङ दुरङ भोरे जातोम
- कायोम, कायोम ओडमना रो कोलकायोमना थोङ गुउठोङ याः कोरनिस
- पुरखा कियाः लूर, अकिल, रीति–विधि ओडो बोरोल ञोःना अनुभव याः पुरखौती तिंजाः
- बोरोल एसाङ होयनाः ओब्कोङ

रो खड़िया लिपि

- माने अनिङ आवकीनिङ, अनिङ आइज्निङ, अनिङ आवनानिङ गुउठोङ या अंगरे रो जयडिम।

लिपि याः दरकार इनाथोङ?

पुरखा परिया ते लिपि याः दरकार उम आवकी। झाड़ी गा मोञखोःते आवकीमय घड् कायोम डोःडना, कोलकायोमना याः जहां तकनीक याः जरूरत उम आवकी। कायोमना, ञिरीबुङ कायोमना माने इसाराना, जहां चिनहा मिड्ना, जहां लेखुड याः साड़ा सोधोम अकड़ाः बुङ नो तुरथे कटिज् देरी बुङ गा मुगम तियाः कामु होयगोड्ना लाःकी।

होडोम जाइत, एसाङ याः रो एसाङाः खरचा–बरचाः कायोम की अनिङाः एसाङ मोःझिते डियरना चाडोंः बरसेःज सय मेमोन डेना–डेना हालेइत बदलीना माडेयोः। पढ़ई ते लंजरायनाः थोङ रो होडोम जाइत की अनियाः पुरखा कियाः तेरतेर–बयबय आइन–कानून कियाः तोब्हलुङ ते कागच थेपड़े गोठोःकी रो पुरखा किते ओड़झाय गोठोःकी। एसाङ उकड़ाः थोङ सिगिलोः मुदा अंगरेज की सेठ, साहुकार, जिमिदार किते सोरी डोड्कोन धरम, उलफाः कायोम रो इञम भोरे आइन–कानून ते मानेनाः थोङ मजबूर कारोयोःकी। मिड्–मिड् लाङएकोर, बेयाकरन, लिपि ते ओड़झायकोन, अनिङ ते, अनियाः लाङबुङ डिबसाः गोठोःकी।

जरूरत रो गुन कयनो लेखुङः होयता। उजेः लेबु रो एसाङ एबलोङ याः कायोम ओडमनाः साधन उम्बोड़िज् मुदा अकिल, लाङ डाः रो पुरखा आइन–कानून, मिड्–मिड् उम मिड् कायोम–काथा किते कब्तिबना रो बनचायनाः जिनिस आइज्। एनेम उकड़ाः लेबु कियाः मुगम चोना, एसाङा ते महमायनाः कामु मसकिल होयता। लिपि याः कामु तमगाः डिजिटल परिया ते जेघय आइज् होब्ने गा ओसगंइज परिया ते जो आवकी।

इना नो उजेः लेबुकियाः बिचार रो मोनः कायोम (भावना) ते मिड्कोन उनना याः सोनः तय जुघय बारु गोड्झुङ आइज्।

ओडोः–ओडोः एसाङ कियाः गुड् गा खड़िया एसाङा लेबु की जो उ मसकिल कामु ते डिबसाःना जिमा बेबरोड् गोड्सिकी। लाङएकोरोःकी बेयाकरन मिठोःकी पुरखा कियाः तेरतेर लूर–अकिल रो आइन ते कब्तिःफोःकी रो मिठोःकी रो लिपि बायोःकी। बरसेइज् सय मेमोन याः अबसिब ते नुअस केरकेट्टा रो करलुस डुङडुङ कियर खड़िया लिपि बायोः कियर। हिन भेरे की गा ओडोः मोञ लिपि बिरमित्रापुराः एमएलए आवकी कियर जुनास बिलुङ होकियर

बायसिखोः कियर। लिपि बयबयकड़ कियाः ञिमि ते ओडो मोञ ञिमि जो आइज्– अम्ब्रस सोरेङ। सुःढा मोन सुःढाः ओडो मोञ ञिमि येसु समाजः ख्रिस्तोफर डुङडुङ कियरः, जो उते आइज्। 2020 ते उकियर मोञ तोनमे लिपि (कलगा लुङतोय) बायसिःकियर अजेः नो 16 इंदरेल (जुलाई 2023) ते रांची ते मोञ डोकलोः ते ओलडोमकी। उजेः को आवकी लिपि याः बांखड़ी। उ धइर तेगा एले प्यारा केरकेट्टा फाउंडेशन रांची तिइजतय ओडोः मोञ तोनमे लिपि 'जोलोम सीनी' भेंट ओलतइज् ले।

जोलोम सीनी

'जोलोम' याः माने 'जोलोमना' रो 'सीनी' हार याः थोङ गामडोमता। लिपि, लाङ रो सोधोम ते तोनमे रूप तेरते। जोलोमना से ओः तोनमे लेखुड केलोम बोः योता। 'सीनी' उम होयना हाःनुङ लाः को उसलोः ते आसानी से मिड़्ना उम पालडोमना हाःनिङ। खड़िया लेबु की उसलोः ते सीनी बुङ सिलोःकीमय रो ञोःना थोङ बाः रुमकुम बायोकी। उ लेखुड जोलोम रो सीनी खड़िया डाः याः मूल कायोम ते गोःगोः आइज। ओडो उ उबर सब्लुङ लिपि रो मिड़्ना ते खास माने तेरतेकी। लिपि बुङ अनिङ सब्लुङ याः खेती करायतेनिङ रो कायोम, कायोम ओडमना रो कोलकायोमना बुङ इकुड केलोम 'बाः' कुइतेनिङ।

'जोलोम सीनी' ञिमि उननाः ओडो मोञ कारन आइज–झाड़ी आदिवासी कियाः मेतिब। संताल की अड़्कियाः लिपि ते 'ओलचिकि', हो की 'वारङचिति', उरांव की अड़्कियाः लिपि ते 'तोलोंगसिकि' गामो की। लिपि कियाः उ राग ते 'जोलोम सीनी' जो बायकोन उनते रो मुगम डोड़्ते, झाड़ी आदिवासी कियाः मेतिब ते पाड़ोम तेरते।

‘जोलोम सीनी’ याः आकार-परकार

जोलोम सीनी याः आकार–परकार रो कामु ओलना ते उ खड़िया लिपि इकुड गा सहज आइज। उजेः खड़िया परम्परा रो डाः याः हिसब बुङ बयडोमसि। उकड़ा आकार–परकार ते खड़िया डाः याः कयनो कायोम योना। जेघय नो– आयो, लेबु, बसाली कोङताङ, केलुङ, दारु, कोन्थेड, बाजा रो खड़िया ओबकोङ खोदा। उकड़ा सोब अक्षर इकुड सहजेगा फहमडोमना पालता रो मिड्ना पालता।

लिपि ते उ ओबकोङ कोनोन कितब ते योना पालडोमता। उ लिपि कम्प्यूटर यअ देवनागरी कीबोर्ड हिसब बुङ तेरतेर आइज्। माने जहांय गा मोबाइल, टैबलेट, आईपैड, लैपटाप रो डेस्कटाप कम्प्यूटर ते देवनागरी इया रोमन बुङ टाइप करायतेकी लाः होघयगा उ लिपि बुङ लिखायना पालतेकी। उ लिपि ते सीखेना रो टाइपना थोङ जुदा से की–बोर्ड सीखेना नो जहां लेखुड् याः खास ट्रेनिंग जरूरत उम्बोड़िज्, सहजेगा आइज्।

‘कोनजोगा’ खड़िया फॉन्ट ते अपन डिवाइस ते इंस्टोल करायपे रो मिड्ना अबसिबेपे। खड़िया यूनिकोड फॉन्ट डेलगोड्ना लोःढो उजेः इंस्टॉल करायना उम होयना। लाः अनिङ (दुनिया) ते जहां खोःते ‘कोनजोगा’ फॉन्ट बुङ सहजेगा लिखाना–मिड्ना पालेनिङ, मंगल याः लेखुड्, मुदा लाङ सोइज्ना चाही।

अम्पे झाड़ीयगा संबरा चाही

प्यारा केरकेट्टा फाउंडेशन अम्पे झाड़ी बुङ अरजी ते नो डिजिटल होयगा चोलतइज् उ दुनिया ते लिपि मोञ कामुनाः जिनिस माने औजार आइज्। दुनिया ते कोनोन तय कोनोन लाङ जो लिपि गुने अपन लाङ डाः रो एसाङ याः ओबकोङ ते बनचायना थोङ कोड़ी ते तोलकोन समटाय गोड्सिज्। कि:ते नो कि:ते आदिवासी लिपि

यूनिकोड फॉन्टः सोरी गूगल ते आइज्। खड़िया लूर अकिल रो लाङ ते बनचायना रो मुगम योनाः थोङ 'जोलोम सीनी' मुडु पाड़ोमगर लेखुड् कटा डारना आइज्।

9 अगस्त 2024 तय 'जोलोम सीनी' खड़िया लिपि याः अबसिब फॉन्ट 'कोनजोगा' याः पहिला वर्सन 01 फाउंडेशन याः वेबसाइट www.jolomsini.kharia.org ते कुइना। खड़िया डॉट ओआरजी ते कीबोर्ड मैप, खड़िया प्राइमर रो होडोम–होडोम जरूरी कोङनाः कायोम कुइना। उजेः आम्पे डाउनलोड करायकोन कामु ते डोड्ना पालतेपे। कामु ते डोड्ना लोःढो लिपि रो फॉन्ट याः कमी माने उम बारू कायोम उतुनेपे सलाह इया सुझाव तेरेपे। उजेः ओडोः केलोम बोः बायना पालडोमना। अम्पे झाड़ी याः उच्छी रो दुलर कायोम याः आसरा आवना।

जय जोहार। जय खड़िया। जय आदिवासी।

अरजीकड़

वंदना टेटे
प्यारा केरकेट्टा फाउंडेशन
रांची-सिमडाः (झारखण्ड)

जोलोम सीनी (खड़िया लिपि) : एक परिचय

खड़िया भाषा

- सृष्टि की अबूझता की पहली डीकोडिंग.
- प्रकृति में व्याप्त ध्वनियों का अद्भुत संग्रह.
- जीवन में संगीतात्मकता का प्राण तत्त्व.
- संवाद, संचार और साझाकरण का सामूहिक अभ्यास.
- पुरखा ज्ञान परंपरा और अनुभव की ऐतिहासिक धरोहर.
- संस्कृति, दर्शन और विश्वास की परिवर्तनशील अगुआ.
- जीवंत समुदाय होने का अस्तित्व बोध.

और खड़िया लिपि?

- यानी हम थे, हम हैं, हम रहेंगे का सामूहिक संकल्प और उद्घोष.

लिपि की जरूरत क्यों?

पुरखा जमाने में लिपि की जरूरत नहीं थी। समूचा कुल एक साथ रहता था जिनके संवाद, संचार और साझाकरण में किसी अन्य तकनीक की जरूरत नहीं थी। वाचिक व आंगिक संकेतों, खास चिन्हों व ध्वनियों और कुछ स्थायी व तात्कालिक उपायों से उनका काम मजे से हो जाता था।

बाहरी दुनिया की सामाजिक-आर्थिक घुसपैठ के कारण बीसवीं सदी के आते-आते यह स्थिति बदलने लगी। शिक्षा के प्रचार-प्रसार और बाहरी दुनिया द्वारा थोपी गई व्यवस्था ने पुरखों को पट्टे के जाल में बुरी तरह से फंसा लिया। हालांकि वे लोग इसके खिलाफ खूब लड़े लेकिन अंग्रेजों ने देशी महाजन, जमींदार का साथ लेकर, धर्म, छल-बल और भयानक हिंसा से हमें लिखंत-पढ़ंत की बाहरी संस्कृति को मानने के लिए मजबूर कर दिया। पर आदिवासी भाषाओं को न अंग्रेजों ने और

न ही भारतीय संविधान ने स्वीकार किया। लिखित साहित्य, व्याकरण, लिपि का अड़ंगा डालकर हमें हमारी ही भाषाओं से दूर कर दिया।

लिपि की जरूरत और महत्ता कई आयामों में बंटी हुई है। यह न केवल व्यक्तिगत और सामाजिक संचार का माध्यम है, बल्कि ज्ञान, संस्कृति, और सभ्यता के संकलन और संरक्षण का उपकरण भी है। इसके बिना, मानव समाज का विकास और प्रगति संभव नहीं होता। लिपि का महत्व आज के डिजिटल युग में भी उतना ही है, जितना प्राचीन काल में था, क्योंकि यह मानव विचारों और भावनाओं के स्थायी दस्तावेजीकरण का सबसे प्रभावी माध्यम है।

अन्य आदिवासी समुदायों की तरह खड़िया लोगों ने भी इस अड़चन को दूर करने के लिए बीड़ा उठाया। साहित्य रचना की, व्याकरण लिखा, मौखिक पुरखौती ज्ञान परंपराओं को सहेजा, उसका दस्तावेजीकरण किया, और लिपि भी बनाई। बीसवीं सदी के आरंभ में नुअस केरकेट्टा एक लिपि लेकर आए। बीरु परगना के ताराबोगा निवासी करलुस डुङडुङ ने भी एक खड़िया लिपि बनाई। 1981 में बिरमित्रापुर के विधायक जुनास बिलुङ ने एक लिपि बनाई। लिपि बनाने वालों में अम्ब्रस सोरेङ भी हैं। 2020 में ख्रिस्तोफर डुङडुङ ये.स. ने एक नई लिपि 'कलगा लुंङतोय' का सृजन किया है जिसे 16 जुलाई 2023 को रांची में हुई एक बैठक में स्वीकार किया गया है। और अब 2024 में, हम प्यारा केरकेट्टा फाउंडेशन की तरफ से आपको एक और नई खड़िया लिपि, 'जोलोम सीनी' भेंट कर रहे हैं।

जोलोम सीनी

'जोलोम' का अर्थ है रंगाई-पुताई करना और 'सीनी' हल के लिए प्रयोग किया जाता है। लिपि भाषा और ध्वनियों को नये रुप में प्रस्तुत करती है। रंगाई-पुताई भी घर को नई सुंदरता और नया 'लुक' देती है। 'सीनी' न होता तो धरती पर आसानी से लिख पाना संभव नहीं था। हल चलाकर खड़िया लोग कृषिजीवी कहलाए और जीने के लिए अन्न उपजाया। इस तरह दोनों शब्द मूल खड़िया संस्कृति के वाहक हैं और 'लिपि' व लेखन के अर्थ को खास संदर्भ प्रदान करते हैं। लिपि से

भी हम शब्दों की खेती करते हैं और संवाद, संचार व साझाकरण का अनमोल 'अन्न' उपजाते हैं।

'जोलोम सीनी' नाम रखने का एक और कारण आदिवासियों की एकजुटता है। संतालों ने अपनी लिपि को ओलचिकि, हो लोगों ने वारङचिति और उरांवों ने अपनी लिपि का नाम 'तोलोंग सिकि' रखा है। लिपियों की इस लय को 'जोलोम सीनी' आगे बढ़ाता है और आदिवासी एकजुटता को मजबूत करता है।

'जोलोम सीनी' का आकार-प्रकार और उपयोग

यह खड़िया लिपि बहुत आसान है। इसे खड़िया जीवन परंपरा और संस्कृति के अनुरूप सृजित किया गया है। इसके आकारों में खड़िया संस्कृति के अनेक तत्त्वों की झलक मिलेगी। जैसे- मां, लेबु, बसाली गाय, हाथी, पेड़-पौधे, पशु-पक्षी, बाजा, और खड़िया पहचान वाले खोदा। इसके सारे अक्षर बहुत आसानी से याद किए और लिखे जा सकते हैं।

'कोनजोगा' खड़िया फॉन्ट

'जोलोम सीनी' लिपि का पहला फॉन्ट 'कोनजोगा' वर्सन 01 तैयार है जिसकी झलक आप इस पुस्तिका में देख सकते हैं। इस लिपि का निर्माण देवनागरी कीबोर्ड के अनुसार की गई है। यानी कोई भी व्यक्ति जो मोबाइल, टैब, आईपैड, लैपटाप या कंप्यूटर में देवनागरी या रोमन में टाइप करता है बिल्कुल उसी तरह से इस लिपि को आंख-मूंदकर लिख सकता है। इस लिपि को सीखने और टाइप करने के लिए अलग से न तो कीबोर्ड सीखना है और न ही किसी तरह के खास प्रशिक्षण की जरूरत है। एकदम आसान है। फॉन्ट को केवल अपने डिवाइस में इंस्टाल कीजिए और लिखना शुरु कर दीजिए। खड़िया यूनिकोड फॉन्ट आ जाने के बाद आपको इसे इंस्टाल भी नहीं करना पड़ेगा। तब आप दुनिया में कहीं भी अपनी खड़िया लिपि 'जोलोम सीनी' में आसानी से लिख सकेंगे, ठीक मंगल की तरह।

आप सबका सहयोग चाहिए

प्यारा केरकेट्टा फाउंडेशन आप सबसे अपील करती है कि डिजिटल होती दुनिया में 'लिपि' एक जरूरी औजार है। विश्वभर में छोटी सी छोटी भाषाएं भी लिपि के जरिए अपने भाषाई और सांस्कृतिक अस्तित्व को बचाने के लिए कमर कस चुकी है। अनेक आदिवासी लिपियां यूनिकोड फॉन्ट के साथ गूगल पर मौजूद हैं। खड़िया ज्ञान परंपरा और भाषिक क्षमता को बचाने, संरक्षित करने और आगे बढ़ाने के लिए 'जोलोम सीनी' एक मजबूत कदम है। इस लिपि के द्वारा फाउंडेशन उन सभी खड़िया विद्वानों के प्रयास को नमन करती है जिन्होंने समय-समय पर खड़िया लिपि बनाई।

आइए हमसब मिलकर उनके सपनों को साकार करने के लिए एकजुट हों। 'जोलोम सीनी' को अपनाएं। अपनी प्रतिक्रिया, आलोचनाएं और सुझाव भेजें ताकि यह सच्चे अर्थों में खड़िया समाज की व्यावहारिक लिपि बन सके।

'जोलोम सीनी' खड़िया लिपि का पहला फॉन्ट 'कोनजोगा' का वर्सन 01 फाउंडेशन की वेबसाइट www.jolomsini.kharia.org पर 9 अगस्त 2024 से कीबोर्ड मैप, खड़िया प्राइमर और अन्य सभी जरूरी जानकारियों के साथ उपलब्ध रहेगा। जिसे आप डाउनलोड कर इस्तेमाल कर सकते हैं। इस्तेमाल करने के बाद लिपि और फॉन्ट में मौजूद कमियों के लिए आप अपना सुझाव हमें जरूर भेजें ताकि इसे और सुंदर बनाया जा सके। आप सबके उलाहना और दुलार का इंतजार रहेगा।

जय जोहार। जय खड़िया। जय आदिवासी।

अरजी

वंदना टेटे

प्यारा केरकेट्टा फाउंडेशन

रांची-सिमडाः (झारखण्ड)

Jolom Sini (Kharia Writing System) : An Introduction

Kharia Language

- The first decoding of the mysteries of creation.
- A wonderful collection of sounds found in nature.
- The life force of musicality in life.
- A collective practice of dialogue, communication, and sharing.
- A historical heritage of ancestral knowledge traditions and experiences.
- A dynamic leader of culture, philosophy, and faith.
- The existential awareness of being a vibrant community.

And the Kharia Script?

- A collective resolve and proclamation that we were, we are, and we will be.

Why the need for a script?

In ancient times, there was no need for a script. The entire clan lived together, and they didn't need any other technology for their communication and sharing. Their work was done with ease through verbal and physical gestures, special signs and sounds, and

some permanent and temporary measures.

With the socio-economic intrusion of the outside world, this situation began to change by the twentieth century. The spread of education and the system imposed by the outside world trapped the ancestors in a web of leases. Although they fought hard against it, the British, with the help of native moneylenders and landlords, forced us to accept the external culture of literacy through religion, deceit, and terrible violence. However, neither the British nor the Indian Constitution accepted Adivasi (First Nations) languages. They separated us from our own languages by putting obstacles of written literature, grammar, and script.

The need and importance of script are divided into many dimensions. It is not only a medium of personal and social communication but also a tool for the compilation and preservation of knowledge, culture, and civilization. Without it, the development and progress of human society would not be possible. The importance of script is as much in today's digital age as it was in ancient times because it is the most effective medium for the permanent documentation of human thoughts and emotions.

Like other First Nation communities, the Kharia people also took the initiative to overcome this obstacle. They created literature, wrote grammar, preserved oral ancestral knowledge traditions, documented them, and also created scripts. At the beginning of the twentieth century, Nuas Kerketta created the first Kharia script. A resident of Taraboga in Biru Pargana, Karlus Dungdung also came up with a new script. In the 1981, a script was created by Birmitrapur MLA Junas Bilung. Ambrus Soreng is also one of the script creators. The recent name among the script creators is Christopher

Dungdung. In 2020, he created a new script called 'Kalga Lungtoy', which was accepted in a meeting held in Ranchi on July 16, 2023. And now in 2024, we, on behalf of the Pyara Kerketta Foundation, are presenting you with another new Kharia script, 'Jolom Sini'.

Jolom Sini

'Jolom' means painting, and 'Sini' is used for a plow. The script presents language and sounds in a new form. painting also gives the house a new beauty and a new 'look'. Without 'Sini', it would not have been possible to write easily on earth. By plowing, the Kharia people were called farmers and grew food for their livelihood. In this way, both words are carriers of the original Kharia culture and provide a special context to the meaning of 'script' and writing. With script, we also cultivate words and produce the precious 'food' of dialogue, communication, and sharing.

Another reason for naming it 'Jolom Sini' is the unity of the Adivasis. The Santals named their script *Olchiki*, the Ho people named it *Warang Chiti*, and the Oraons named their script *Tolong Siki*. 'Jolom Sini' carries forward this rhythm of scripts and strengthens Adivasi unity.

The shape, form, and use of 'Jolom Sini'

This Kharia script is very easy. It has been created according to Kharia life traditions and culture. Its shapes will reflect many elements of Kharia culture, such as mother, Human, Basali cow,

elephant, trees and plants, animals and birds, musical instruments, and the characteristic Kharia tattoo. All its letters can be easily memorized and written.

Kharia Font 'Konjoga'

The first font of the 'Jolom Sini' script, 'Konjoga' version 01, is ready, a glimpse of which you can see in this introductory booklet. This script has been created according to the Devanagari keyboard. This means that anyone who types in Devanagari or Roman on a mobile, tab, iPad, laptop, or computer can write in this script blindly in the same way. There is no need to learn a separate keyboard or any special training to learn and type this script. It's very easy. Just install the font on your device and start writing. Once the Kharia Unicode font is available, you won't even have to install it. Then you will be able to easily write in your Kharia script 'Jolom Sini' anywhere in the world, just like Mangal Unicode.

We need your support

The Pyara Kerketta Foundation appeals to all of you that 'script' is a necessary tool in the digital world. Even the smallest languages around the world are gearing up to save their linguistic and cultural existence through scripts. Many Adivasi scripts are present on Google with Unicode fonts. 'Jolom Sini' is a strong step towards saving, preserving, and advancing the Kharia knowledge tradition and linguistic ability. Through this script, the foundation salutes the efforts of all those Kharia scholars who have created

Kharia scripts from time to time.

Let us all unite to realize their dreams. Adopt 'Jolom Sini'. Send your feedback, criticisms, and suggestions so that it can truly become a practical script for the Kharia society.

From August 9, 2024, the first font of the 'Jolom Sini' Kharia script, 'Konjoga' version 01, will be available on the foundation's website www.jolomsini.kharia.org with keyboard map, Kharia primer, and all other necessary information, which you can download and use. After using it, please send us your suggestions for the shortcomings in the script and font so that it can be made even more beautiful. We will be waiting for your feedback and affection.

Jai Johar. Jai Kharia. Jai Adivasi.

with warm regards

Vandna Tete
Pyara Kerketta Foundation
Ranchi-Simdega (Jharkhand)

[illegible]

खड़िया जोलोम (खड़िया वर्णमाला)

[illegible] | केनना | स्वर					
अ	आ	इ	ई	उ	ऊ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
ए	ऐ	ओ	औ	अं	: , ऽ, ‘
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible] मेने (मात्रा)	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

[illegible] |सा:म्|व्यंजन				
क	ख	ग	घ	ङ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
च	छ	ज	झ	ञ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
ट	ठ	ड	ढ	ण
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
त	थ	द	ध	न
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
प	फ	ब	भ	म
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
य	र	ल	व	स
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
ह	ड़	ढ़	ङ्ग	
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	

[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]?

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

रोज केरकेट्टा की खड़िया कविता देवनागरी लिपि में

अबसिब मुरडअ

अबसिब मुरडअ
खिरोम को भेंरेसिखोओ
रो काडोङकि ओनघेर लेखुड
सेलहोङ तय पंउरेगा तोब्लुङ
गिदगिद गिदगिद लेंगे डाः ते
कुइजना लाःकीमय
डाः ते तारकेलेङना लाःकीमय
अम योसिइडेम
काडोङ कियअ कुनुइज
काडोङ कियअ पुनुडपुड?

मुरडअ ते गोइजलोओ नो गअढ़ा
भेंरेकोन छपले छपछप
धाइरे-धाइर डेबताकी तोब्हलुङ
पसरे गोडताकी डअ ते छेपेर-छेपेर
हो निठुर लेबु
कोनघेर, बुङ कुन्डुउ झाड़ी
कोनोन महा मुउकोन जाल सोरी
गोएजलोओ, नाला, ओम्पाय रो खिरोम ते
छहलेकिमय, बझायोओकी जाल बुङ

रोज केरकेट्टा की खड़िया कविता हिंदी में (अनुवादः कवयित्री)

पहली बारिश

पहली बरसात में ही
नदी उमड़ी थी
और मछलियां मानों जलपरियां
तेजी से गहराई से उमड़ते-उफनते पानी में
ऊंचाई की ओर उड़ी थीं, थिरक रही थीं
रोशनी में चमक रहीं थी
क्या तुमने देखा है
मछलियों का नृत्य
मछलियों का थिरकना?

बारिश में खेत-गड्ढे
छलके छपाछप भर उठे
कतार में ऊपर उठती मछलियां
फैल जातीं छिछले पानी में
और निष्ठुर मानव, जवान, बूढ़-बच्चे सब
निकल पड़े जाल लेकर;
नालों, झरनों और नदियों में
छा जाते जो काल बनकर।

वे मछलियां बेखौफ
मौत से अठखेलियां करती
फंस गईं, फंसा ली गईं जालों में।

Rose Kerketta's Kharia poem in English (Translation: AKP)

First Rain

In the very first rain,
The river swelled
And the fish like mermaids
In the rising surging water
Rose towards the heights
They danced
Sparkled in the light
Have you seen?
The dance of the fish,
The swaying of the fish?

In the rain
the fields and ditches
Overflowed with a 'splish-splash'
The fish rising in a line
Spread out in the shallow water,
And the cruel humans
young, old and children, all
Came out with nets
They covered the streams, waterfalls and rivers
like death.

Those fearless fish,
Playing with death,
Were trapped, were caught,
In the nets.

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

प्यारा केरकेट्टा की खड़िया कहानी देवनागरी लिपि में

बेरथअ बिहा

किनिरअ सेइरगा केशेल रो ओरबेंग जैसन महा महा दारू झाड़ि, होखोज्डोंगा पल्हायना मांडे सिखोओ। झाड़ि रोछोब किनिरते तिमसोंग लअ गोड्सिखोःओ। इडिबनानो पतररुङ्गअ बनासे किनिर पतर योना लअकि। मेंयअना नो चडरी बीरु हेंपड् खोड़ियअ कोन्सेलडुः कोपुडूः झाड़ि बीरुते छपले गोड्ना लअकि मोंय। बीरुते आलोंग घांसअ मारे तीतीर, अस्कल ओडो मरअ लेबुअ मोड् तय सुगमड्अ बन्चेना लअकि मोंय। कोन्सेल कोनघेर कि झाड़ि जरअ, तारोब ओडो तिड़ेल ञोओनअ घड् गोटा बीरु छपले सिइना लअकि मोंय। लेरेए कोन्सेल कोनघेर कियअ पाडु बोंग गोटा बीरु अन्दोर सिइना लअकि। होभेरेकिगा लेबुकि तोनमें क्रिस्तान होयना माड़े सिखोःमोंय। पाड़ु कुउढिंग आलोंग बोंग लेरेएना लअकि मोंय। तोनमें तोनमें कोड़ा रो निगा प्रचार रो मास्टर नागपूर रो सोनपूर तय होखोज्डोगा डामकोन झाड़ि पुरखौती आलोंग दुरंग रो कुइज् कुइज् ते "शैतानअखेड" गमकोन परचारना अबसिब सिखोःमोंय। हिनअ घड् खोड़िते लेरेए लाडा जो होमने उम होयना लअकि। जे कुछ पाड़ु बाहेरतेगा होयना लअकि रो पाड़ु बअ घड् को बीरु तोबल्हुंग बढ़िया ठांड़ो गमडोमता। मुसनिंग बीरु तय आरेना अंटाते बीरु करघा तय ''लेरेए कोनघेर पाड़ुता; छडि कोनसेल लोडोगा डेलता" पाड़ु झाड़ि असे पसेयअ। लेबुकियअ लुतुरते रनरनायलोओ डामकि। झाड़ि रिझवार रो लेरेए कोनसेल कोनघेरकि लुतुर ओनायोओकि। सोओतोगा झाड़ि डेएलुठोओकि। हो लेरेए कोनसेन कोनघेर जुघयगा डेएलु ठोओकि। इघय नो खड़िया पाड़ु बअ रागगा उघय आइज नो कुसुते मेंसोनअ घड् को ओबडेब गोड़े। हेमनेतगाः- "किःते मेमोनते बोयो रोडेम; इंञको बोयो अमअतेगा आवनञ्।" पाड़ु बअ लहर तुतांतय

तोबल्हुंग ओन्डोरकि।

झाड़िगा दंदु पौलुसअ पाड़ुते कोंग गोथोः मोंय। जे ओन्डरोओकि झाड़ि कोनसेल ओनायोओकि। मुदा बेरथा सोमारी पाड़ु ओन्डोरकोन झाड़ियअ तय जुघय लरेएकि। बेरथअ मोनतेगा जुघय गुत-गुती लअकि। पाड़ु ओन्डोरकोन बेरथअ जियोम ‘ठक’ लेतेकि। दंदु पौलुस ते मोइञ मोड् एनेम यो रो मोइञ कायोम एनेम गाम होओ एंगना मोनगा उम होयकि।

तोनमें तोनमें मिशन डियरसिह मोंय। बेरथअ सेंगको सोमारीगा ञिंमि आवकि। रो मिशन होयकि तेउ जो बेरथअ सोरी सोरी सोमारी जो गमना लअकि मोंय। लअ बेरथा सोमारी बीरु टोलाः धाधुमतियसअ बिज्डोम आवकि। योना रो कामु उदम बरुडअ। कोनसेलते रामपुर दरङ्गाटोला बिहायोओकि। खोड़िते होजेएगा सेंग क्रिस्तानी बिहा होयकि। होकड़अ सेंग झाड़ि सौंसार बिहा होयकि। कोड़ा, निगा, मास्टर, प्रचार कियअ जोर बोंग खड़ियाकि अपन पुरखौति बिहाः दस्तूरते मेलायना अबसिब सिखोःमोंय। मांसअ चलन सेंग पुरखाते उम आवकि। मुदा क्रिस्तान होयनाः अस पस को मांसअ चलन होय चुके सिखोः। उ होओ योना, सरजमीन चोना, चिलम गोरोड्ना चोना, मेसोन सुखमुंड़ योना, मेसोन सुखमुंड़ ओलना ओड़ोः डांड़अ ओयेंग गमकोन घोल सोन उमय चोना लअकि।

बीरु टोलअकि, दरङ्गा टोलाः रीझा समुएलअते झाड़ि तोनमें दस्तूरते जबराई पुरायोओकि। रीझा जुएल जुघय बेतोड् को उम आवकि मुदा इये, जाय धांव चोलकिमोंय तय धांव उबर उःफे एकड़ी तय थोरे उमय चोल्की। ओडोओ घरी धांव मांस भातगा। डांड़अ ओयेंग भेरेको चोना चोलकिमोंय जे मोंलोय एकड़ी तय जुघय; करीब तिबरु एकड़ी। रेमअ एनेम रेमअ झाड़ि चोलकिमोंय।

खड़िया कियअते एनेम रेमअ ठाँड़ोते चोना उम चोनअ इजो बिचार उम्बोःड़ेज। गियल बोतोंग इजो उमय उनते। बेचरङ्गा जुएल खसी बंडा जुमायना-

जुमायना रो दाइल रुमकुब करायना-करायना जे आवकि झाड़िजेए तुरतुर मोंयगोथोः रो पैंचा उधरा बोंग तिलडोम गोड्कि।

बेरथा बेम्हलोम उअ कोनसेल योना बोंग इघय सुन्दर योता होघयगा कामु उदम रो चाल चलन बोंग जो सुन्दर डअ बेटी कुण्डुः आवकि। खोड़ि भोइरते बेटी कुण्डु मुःसिड गमकोन झाड़ि सहरायना लअकि मोंय। चाल चलन को हेमने सुन्दर पक्कानों खोड़ियअ कोड़ा मास्टर बहकायना लअदखाकि मुदा गोड्झुंग तय सिबतिलना उमपालोः। बेरथअ निमन मजबूतीते योकोन मास्टरगा गियल गोड्कि रो बेरथअ मुगमते उम पालना लअकि। मास्टरअ जियोम गियल बोंग उहुज गोड्ना लअकि। बेरथा होघय अडियअ जियोमञिरिते उघयसाफ ओडो लोरेंग डअ उनसिखोओ रो आवकि। झाड़ि गमना लअकि मोंय ''अलबत बेटी कुंडुः।''

बेरथअ लेखेगा सौडोम समूएल जो बरुडअ बेटा कुंडुः आवकि। झाड़ियअ मुगमते बरुडअ बोयो आवकि मेला धीरा सोरोधार बोयो। मुदा बेरथअ किनकर डोम बिहा होयकि बोओतय-बिहा बोंग होओ गुइज् डअ डोम गोकि गमकोन होरोजूना मांडेयोओ। बेरथाते कुल्डअ जावे, कामुना उमपाले तेउजा लेरुना उम्बोओ चाही। गितअकि कहले गामे-होओ दुराते गुइज् डअ कोन किमिन ओलसिइडिगं होकड़अ नाव डोम जौडिव गितागअ गितअ। उगअ झाड़ि कामु इञअ सिरेगा। इयअ गितअ? एले कहियो उघय उमले आवकि।

उघय आवनाले लअ दिनो धोगेले हअनिंग!! बेचारी बेरथा खुश करायनाअ घड् कामुदखाकि मुदा खुशना उम पालोओ। समुएल को सेंघोर डअ कोनघेर, होगअ दशा योता-योता रो मांडोमअ कायोम ओण्डोर-ओण्डोर कुहकेना मांडेयोओ। आखिर बिहअ उबर लेरंग होयना-होयना समुएलते फिकिर बोंग कुसु जाब् गोथोओ। कुसु हेमने जोर होयगोड्कि नो कतरो कोनो करायोओकि मुदा उमगा बोनेकि। मुसनिंग सिंकोय सुलअ अब् तब् मांडोम अपडोम रो झाड़ियअ तय

जुघय बेरथाते मेलायटुयोओ रो चोलकनकि। बेरथअ उडुल सितिल जेलोंग गोड्कि। मोड् मोलिब गोड्कि रो झाड़ि कटा तीइ पिज् गोड्कि। कुहके-कुहके इञम सफाकि। बरतोओ उ फेतोओ पेए चअखना मेलाय गोथोओ।

बेरथअ किनकर डोम जो गरजे-गरजे, कौर-कौर इकुड इञमकि, “होओ गुइज्डअ कोन बिहा कायोज् रे बेटायिञ, होडोमअ बेटी बाहिन ते उते मेलाय टुयोब रे बेटायिञ..... इगरहाते रोःहोते डोआकिम रे....। अमअ घड् राइज् गेबसिइकि रे बेटायिनं......।” हेंएघयगा बेतोड् रो लेनेज सहेकोन थोम गोठंग ससुरेरते आवकि। झाड़ि जेए सहेकोन किनकर ससुर डोमअ सेवा सुसरना लामोओ। मुदा उम पालोओ। आखिर मुसनिंग इंजमगा तोरोओगा पेठिया लगायकोन नहियर चोलकनकि।

बेरथा नहियार डेलकि। होओते को इजो ञोओनअ ठेकान उम्बोओ। सका पोंइचा उम ओयेंगना पाले गमकोन बेरजी उमय तेरते। तेउजो बेरथा मांडोमअ आलर दुलर कुइकोन दिरोम-दिरोम झाड़ि फिकिरते इरिफोओ। दिरोम-दिरोम कोनसेल कोनघेर किबोंग लाडा कायोमना मांड़ेयो। खोड़ियअ बिहाल कोनसेल कोनघेर कितेयोते रो अडियअ बिहाल जियोमते कोनोठोः मेसोन-मेसोन एकलागा आवता भेरे मारे हेएजोते रो इञमता। भगवान पोनोमोसोरते बरुडअ आवनयिञं गम कोन जो कोनोठोः। मुदा जवानी भोरे ञिरि होखोज्डोंगा समय डामसिखोःओ। एकला आवना उम पालोओ। रो मांडोम जो मेसोन-मेसोन गम गोड्ना लअकि “धांय रोओ जहांय ते धोगेरो जहांतिज् चोनम। ओहरे बेरथअ बेरजो गोड्झुंग बताय कड़ उम्बोओ। बेरजो बरझाय कड़ उमय आवकि।” आखिर हिड़ो डअते पालते भोइर को छेकाते। उम पालते लअको हिड़ोतेगा पअ गोड्ते। बेरथअ हिड़ो जो पअ गोड्कि। लेरेए लाडागा पाड़ुगा चडरीयअ हान पखी टागंरी टोलअ दंदु पौलुसअ पाड़ुते बीरु करघा तय अरखायोओ। रो भेंट घाट होयकि कियर।

किःते देरी कायोम कि कियर रो इकायोम कि कियर जेः को गमना उम पालना। बेरथा हो दिनो ढेइर इडिबते होओ डेलकि। तंग बेरथा सफा-सफा सुते अंकुते। बोकोबते-जोल उम घटेना मांडेयोः। कड्ना सोओना तेगा ढेइर समय धोओते। मुसनिंग मेंयअते बेरोड् किमोंय रो योतेमोंय लअ बेरथअ अतुजी पता उम्बोओ। ढेइर जुघय को उम्बोओ मुदा हनअ उवअ कोनसेल कोनघेर जुमेना लअकि मोंय लअ कटिज्-मटिज् कायोम गोड्ना लअकि मोंय। बेर गमते इघय बेर इघय। थोरेक तोओते ओण्डोर-ओकि नो दंदु पौलुस जो आसाम यारोओ।

खोड़ियअ मुडु बरिया लेबु हेमनेगा गामोओ किनो "बरियअगा राजी आवकि जहां लेखे जुमाय गोड्कि हअनिंग जेए को कुंवर कुंडुगअ नेगी जोगी लेखे रोओ उकड़अ जो नेगी जोगिना लामतेकि। ञोओना महा नो इज्जत महां? ञोओनअ घड्अगा अंगसिइते मोंय। होकड़अगा ककुइ डअ गोसोओ टुयोओ।"

प्यारा केरकेट्टा की खड़िया कहानी हिंदी में
(अनुवादः रोज केरकेट्टा)

बेरथा का ब्याह

अभी-अभी जंगल के सखुआ, आसन, केशेल आदि बड़े-बड़े पेड़ पल्लवित होने लगे थे। जंगलों में शाम होते ही आग जला दी जाती थी। रातभर सूखी पत्तियाँ जलती रहतीं और सारा जंगल प्रकाश में नहाया रहता। मधुमास के समय सुबह होते ही गाँव के युवक-युवतियाँ पहाड़ों पर छा जाते। पहाड़ 'सबै घास' से अटा पड़ा था। तीतर, बटेर और मोर आदमी के हाथ पड़ने से पहले ही घास में छिप जाते। बाल-बुतरु और बूढ़े-बुजुर्ग सब चिरौंजी, गूलर और केंद खाने के बहाने पहाड़ों पर चढ़ जाते। शोर, गीत और बाँसुरी की तान से पूरा जंगल गुलजार होता। मन मुक्त होकर भावनाओं को वन में ही तो अभिव्यक्त कर पाता है। ठीक उन्हीं दिनों लोगों ने नया-नया ईसाई धर्म स्वीकार किया था। उनके बीच पूर्वजों द्वारा गाए गीत और नृत्य ही मनोरंजन के साधन थे, परंतु नए-नए शिक्षक और प्रचारक, जो सोनपुर और नागपुर की तरफ से आए थे, वे उन्हें पुरखौती गीत गाने और नाचने से मना करते थे, इसलिए रात को थोड़ी देर तक ही नाच-गान होता था। सो लोग सूखे मौसम का इंतजार करते रहते, ताकि वनों में प्रवेश कर सकें। मुक्त होकर अपनी भावनाओं और अनुभूतियों की अभिव्यक्ति के लिए वन से अधिक उपयुक्त स्थान दूसरा नहीं है। ऐसे ही सुखद मधुमास के एक दिन पहाड़ पर से उतरते हुए लोगों ने एक गीत सुना। पहाड़ की तराई पर अनेक युवतियों ने गीत सुना। गीत के बोल थेः

"रसिक छैला पहाड़ पर गा रहा है (सुनकर)
परित्यक्ता स्त्री रात के अँधेरे में ताक-झाँक कर रही है।"

गीत का राग श्रोताओं के कान में रस घोल गया। मनचली युवतियों का

दिल मचल उठा। वे भी गीत को गुनगुनाने लगीं। युवक तो उत्तेजित ही हो उठे। असल में खड़िया पाडू (एक विशेष राग में गाया जाने वाला गीत) का राग इतना मोहक होता है कि थोड़ी देर के लिए आदमी अपनी पीड़ा भूल जाता है। वैसे ही पल में पहाड़ के दूसरे छोर से गीत गूँज उठाः

"कब तक युवक तुम युवा होगे।
तुम्हारी दाढ़ी मूँछें उगेंगी
मैं तुम्हारी प्रतीक्षा करूँगी।"

गीत हवा के झोंके के साथ तलहटी से पहाड़ की चोटी पर पहुँच गया।

दंदू पौलुस के स्वर को सारे लोगों ने पहचान लिया। युवतियों के अंदर हलचल मची। बेरथा के दिल में कुछ अधिक ही गुदगुदी हुई। उसके दिल की धड़कन बढ़ गई। वह दंदू पौलुस को कम-से-कम एक नजर देखने और बात करने के लिए व्याकुल हो गई। वह मिलने या वापस जाने की दुविधा में फँस गई।

बेरथा का नाम ईसाई होने से पहले सोमारी था, इसलिए उसे लोग बेरथा के साथ-साथ सोमारी भी पुकारते थे। बेरथा सोमारी बीरू टोला के धाधु मतियस की बेटी थी। देखने में जितनी सुहानी थी, काम-धंधे में भी उतनी ही कुशल थी। बेरथा का विवाह रामपुर दरंगा टोला में तय हुआ। गाँव में उसी का पहला क्रिस्तानी विवाह था। उससे पहले सौंसार (मूल आदिवासी धर्म-सरना रीति का विवाह) विवाह होता था। ईसाई होने के साथ ही विवाह में मांस-भात का चलन आ गया। घर देखी, सर-जमीन देखी, चिलम पोड़ाउनी, सुखमूड़ देखना, सुखमूड़ लाने जाना, डंड़अ ओएङ आदि नेगों व रस्मों, रीति-रिवाज के नाम पर कई-कई बार वर के घर जाने लगे थे। ऐसा दस्तूर पहले नहीं था।

बीरू टोला के लोग दरंगा टोला के रीझा सामुएल के घर नए दस्तूरों के मुताबिक कई बार गए। सामुएल के बाप जुएल का घर खाता-पीता ही था। लेकिन नेग के नाम पर खिलाते-खिलाते एक वर्ष के अंदर घर खाली हो गया। लोग जितनी बार आए, मांस-भात से ही सत्कार करना पड़ा। जितनी बार आए, पचास-साठ से

कम नहीं आए। 'डंड़अ ओएङ' में तो पूरे एक सौ बीस जन बिना बुलाए ही आए। बुलाए बिना किसी जगह नहीं जाना चाहिए, ऐसा कोई विचार खड़िया लोगों में नहीं है। लाज-शर्म भी नहीं होती है। तो बेचारा जुएल नेग पूरा करते-करते पस्त हो गया। विवाह के नाम पर घर का सारा अनाज होम हो गया। कर्ज में भी डूब गया।

अब जरा दूसरी ओर भी देखें। दरंगा टोला के लोग भी कम नहीं थे। उन्होंने सलाह की, कि वे भी पूरे गाँव के लोग बरात में जाएँगे, "वे हमारे यहाँ बार-बार खाकर गए हैं, तो क्या हम एक बार भी नहीं जाएँगे?" सो दरंगा टोला से एक सौ अस्सी बरात में गए। टिड्डी जिस तरह पत्तियों, फसलों को चटकर जाती है, वैसे ही दरंगा टोला के लोग धाधु मतियस का सारा अन्न चटकर गए। धाधु मतियस का घर पूरा साफ हो गया। माघ के महीने में ही खाली हो गया। सामने पूरा वर्ष मुँह खोले खड़ा हो गया। दोनों समधियों को दिन में ही तारे दिखाई देने लगे।

यों देखें तो विवाह हँसी-खुशी और नाच-गान के बीच संपन्न हुआ। भोज-भात भी किसी को पसंद हुआ, किसी को नहीं हुआ। अच्छे घर-वर की चर्चा भी किसी-किसी ने की। परंतु अधिकांश असंतुष्ट रहे। किसी ने कहा कि उसे सिर्फ रान की हड्डी मिली, किसी ने कहा उसे शोरबा ही मिला। एक ने कहा कि उसने घर वापस जाकर भोजन किया। दूसरे ने परोसनेवालों की शिकायत की। बेचारे दोनों समधी इष्ट-कुटुंब की प्रसन्न करने में लगे रहे, पर सब पानी में बह गया। न खुदा ही मिला, न बिसाले सनम। इतना ही हुआ कि घर की तंगहाली में दोनों अंदर-ही-अंदर जलने लगे।

बेरथा सुशील थी और काम में भी निपुण थी। लोग गाँव का नाम रोशन करनेवाली कहा करते थे। इतनी दृढ चरित्र की, कि गाँव के शिक्षक ने उसे बहुत बहकाने की चेष्टा की, पर बेरथा डिगी नहीं। बाद में शिक्षक ने उसके सामने आँख उठाने की हिम्मत नहीं की। सब उसके चरित्र की सराहना करते थे।

बेरथा की तरह ही उसका पति सामुएल भी चरित्रवान था। धीर-गंभीर और सुशील स्वभाव था उसका। लेकिन बेरथा की सास बेटे के विवाह से दुःखी हो

गई। जब-तब अंदर-बाहर घुसते-निकलते बड़बड़ाने लगी, "इससे विवाह करके मैंने अपना पूरा घर ही धो डाला, हम तो बरबाद हो गए।" कभी बेरथा की तबीयत बिगड़ जाती, तब भी उसे आराम नहीं करना था। जैसे ही वह बिस्तर पर लेटती, सास सुनाने लगती थी, "घर तबाह कर बहू लाई हूँ, अब देखो बिछावन से नीचे नहीं उतरती है, सारा काम मेरे सिर पर पड़ गया। पता नहीं कितना लेटने का मन करता है! हमारे जमाने में ऐसा नहीं होता था। ऐसा करते तो ये दिन देखते?"

बेचारी बेरथा ने सास-ससुर को प्रसन्न करने के लिए क्या नहीं किया, पर उन्हें प्रसन्न न कर सकी। सामुएल सीधा-साधा युवक था। घर की दशा से अंदर-ही-अंदर घुलने लगा। माँ की बातें सुनकर अंदर-ही-अंदर रो उठता। आखिर विवाह के लगभग दो माह पश्चात् सामुएल ने इस तरह खाट पकड़ ली कि फिर उठा ही नहीं। चिंता की कोई दवा नहीं है।

बहुत खर्च हुआ उसके इलाज पर, लेकिन एक दिन मुरगा बाँग दे, उसी समय लगभग सामुएल वहाँ के लिए प्रस्थान कर गया, जहाँ से कोई वापस नहीं आता। आँखों की रोशनी बुझ गई, हाथ-पैर प्राणहीन हो गए। वह रोई, फफक-फफककर रोई। दो-तीन दिनों तक अन्न-पानी को छुआ भी नहीं।

बेरथा की सास भी रोई। चिल्ला-चिल्ला कर रोई। गरज-गरज कर रोई। वह सिर धुनती और बोलती जाती, "घर तबाह कर मैंने तुम्हारा विवाह किया मेरे बेटे...। तुम किस ग्रह के फेर में पड़ गए? तम्हारे लिए सारी दुनिया में आग लग गई थी, जो इससे विवाह किया? दूसरे की बेटी-बहन को यहाँ लाकर तुमने छोड़ दिया।" सहने की भी सीमा होती है। सारे दुःख सहकर भी बेरथा ने सास-ससुर की सेवा करनी चाही। ताने-लाँछन और कष्ट से वह जर्जर हो गई। नौ माह उसने इसी अवस्था में ससुराल में काटे। जब पीड़ा असह्य हो गई तो वह एक दिन हाट के बहाने नैहर लौट गई।

नैहर की स्थिति अच्छी नहीं थी। घर में कुछ था नहीं। उधार कोई देता नहीं था, इसलिए कि वे वापस करने की स्थिति में नहीं थे। फिर भी बेरथा माँ के आँचल

तले अपना दुःख भूलने लगी। गाँव की सहेलियों से बातें करती, हँसती। धीरे-धीरे वह अपनी व्यथा से मुक्त होने लगी। परंतु कभी अकेले में अपनी विवाहित सखियों को देखकर अपना दुःख याद करती और आँसू बहा लेती थी। लेकिन उसे माँ के प्यार की छाँव में नया जीवन आरंभ करने की प्रेरणा मिली। यद्यपि वह भगवान् से प्रार्थना करती थी कि उसे बल मिले, जिससे कि वह अपने चरित्र की रक्षा कर सके। वह दृढ चरित्र थी, लेकिन उसके जीवन में बसंत अभी-अभी आया था। कभी-कभी मौसम, फूलों, पक्षियों और आकाश को देखकर उसके मन में भी किसी का साहचर्य पाने की उद्दाम इच्छा जाग्रत् हो जाती, तब वह घबराकर रो पड़ती। उसकी माँ के बोल भी उसे उद्विग्न कर देते।

माँ रात को बिछावन पर लेटे हुए कभी-कभी बोल बैठती, "किसी का हाथ थामकर कहीं चली जाओ तो भला। कब तक अकेली बैठी रहोगी?"

ऐसी बातें सुनकर बेरथा निराशा में डूब जाती। चारों ओर अँधेरा दिखाई देता। अँधेरे में ही हाथ-पैर मारती, पर उसे तसल्ली देनेवाला कोई नहीं मिलता। काश! कोई होता, जो उसे रास्ता दिखाता! युवावस्था, उस पर विधवा जीवन! झूठे ही सही, कोई तो तसल्ली देता। बाँध जब तक पानी को रोक सकता है, रोकता है, पर जब सँभाल नहीं पाता तो बाँध टूट जाता है। बेरथा का बाँध भी टूट गया।

चड़री पहाड़ के उस पार टोंगरी टोला है। चड़री टोला के दंदू पौलुस ने पहाड़ पर चढ़कर 'पाडू' गाया। पहाड़ की तराई में बेरथा ने उसे सुना। बेरथा ने बड़े मन से गीत गाकर उसे उत्तर दिया। फिर तो दोनों की मुलाकातें जंगल में ही होने लगीं। वे दोनों कब, कहाँ और कितनी देर तक बातें करते, किसी को पता नहीं। लेकिन बेरथा बड़े मनोयोग से बाल सँवारने, तेल लगाने और साफ कपड़े पहनने लगी।

एक दिन बेरथा जंगल से काफी रात गए घर वापस लौटी। फिर तो घर पर ही बनने-सँवरने में काफी समय लगाने लगी।

इसके बाद किसी एक दिन सुबह घरवालों को पता चला कि बेरथा घर पर नहीं है। गाँव में परिचितों के बीच कानाफूसी हुई। किसी ने कुछ, किसी ने कुछ कहा। थोड़े दिनों के बाद सुना गया कि दंदू पौलुस भी भागकर असम चला गया।

सबकुछ जानने के बाद गाँव के बुजुर्गों ने सिर्फ इतना कहा, "जब दोनों एक-दूसरे को पसंद करते थे तो उन्हें मिला देना चाहिए था। बेरथा के घरवालों ने बड़ी भूल की। 'काँच-कुँवारी' लड़की की तरह दुनिया भर कर नेग-जोग माँगने लगे। भोज-भात बड़ा है या इज्जत? दूसरे का खाने के लिए मुँह फाड़े रहते हैं। अच्छा हुआ झूठी परंपराओं को ठुकराकर चली गई।"

Rose Kerketta's Kharia poem in English (Translation: AKP)

Bertha's Wedding

The tall trees of the forest, like the Sal, Asan, and Kesel, had just begun to sprout new leaves. As evening fell in the jungles, fires were lit. The dry leaves would burn throughout the night, bathing the entire forest in light. During the spring season, young men and women of the village would gather on the hillsides as soon as morning arrived. The hills were covered in "Sabai grass." Partridges, quails, and peacocks would hide in the grass before anyone could catch them. Children, young adults, and the elderly would all climb the hills under the pretext of collecting and eating Chironji nuts, figs, and berries. The entire forest would come alive with the sounds of laughter, songs, and the melody of flutes. Only in the forest could one truly express their emotions freely. It was during those days that people had newly embraced Christianity. The songs and dances passed down from their ancestors were their only means of entertainment. However, the new teachers and preachers who had come from Sonpur and Nagpur forbade them from singing and dancing their traditional songs. Therefore, they could only sing and dance for a short time at night. So, people eagerly awaited the dry season to enter the forests. There was no place better than the forest to express their feelings and experiences freely. On one such pleasant spring day, as people descended from the hill, they heard a song. Many young women at the foot of the hill heard the song. The lyrics of the song were:

"The charming young man sings on the hilltop (listen)

The abandoned woman peers through the darkness of the night."

The melody of the song dissolved sweetness into the ears of the listeners. The hearts of the carefree young women fluttered, and they began to hum the tune. The young men, too, became excited. In truth, the melody of the Khardia Padu (a song sung in a specific tune) is so enchanting that for a while, one forgets their sorrows. In that very moment, a song echoed from the other side of the hill:

"How long, young man, will you remain youthful?

Your beard and mustache will grow.

I will wait for you."

The song, carried by the wind, reached from the foothills to the mountaintop.

Everyone recognized the voice of Dandu Paulus. A stir arose among the young women. Bertha felt an extra tickle in her heart. Her heartbeat quickened. She became eager to catch at least a glimpse of Dandu Paulus and speak to him. She was caught in a dilemma of whether to meet him or return.

Bertha's name before converting to Christianity was Somari, so people called her both Bertha and Somari. Bertha Somari was the daughter of Dadhu Matias of Biru Tola. She was as skilled in her work as she was beautiful to behold.

Bertha's marriage was arranged in Rampur Daranga Tola. It was the first Christian wedding in the village. Before that, traditional Sarnas (Sarna religion weddings) used to take place. With the adoption of Christianity, the practice of serving meat and rice at weddings also began. There were numerous visits to the groom's house under the pretext of various customs and traditions, such as inspecting the house, land, offering tobacco, examining the dowry, bringing the dowry, and performing the Dand Oeng ritual.

Such customs did not exist before.

The people of Biru Tola visited Rijha Samuel's house in Daranga Tola multiple times, following the new customs. Samuel's father, Juel, had a prosperous household. However, within a year, the house was emptied due to the constant feasting in the name of tradition. Every time the guests arrived, they had to be served meat and rice. Each visit consisted of no less than fifty to sixty people. During the "Dand Oeng" ritual, a full one hundred and twenty people arrived uninvited. The Khardia people did not have the notion that one should not go anywhere without an invitation. They also had no sense of shame or embarrassment. So, poor Juel became exhausted trying to fulfill all the customary obligations. All the grains in the house were depleted in the name of the wedding. He even fell into debt.

Now, let's look at the other side. The people of Daranga Tola were no less. They decided that the entire village would join the wedding procession, saying, "They have eaten at our place multiple times, so shouldn't we go even once?" So, one

hundred and eighty people from Daranga Tola went to the wedding. Just as locusts devour leaves and crops, the people of Daranga Tola consumed all of Dadhu Matias's food. Dadhu Matias's house was completely emptied. It became empty in the month of Magh itself. The entire year ahead seemed daunting. Both fathers-in-law began to see stars in broad daylight.

In a way, the wedding was completed amidst laughter, joy, and dancing. Some liked the feast, some didn't. A few people even praised the good family and groom. However, most were dissatisfied. Someone complained about receiving only a bone, another about getting only soup. One person said they went back home to eat. Another complained about the servers. The poor fathers-in-law tried their best to please their relatives and guests, but it all went in vain. Neither God was pleased, nor was the beloved satisfied. The only outcome was that both families, struggling with financial hardship, started to burn with resentment.

Bertha was gentle and skilled in her work. People used to say she brought honor to the village. She was so strong in character that even the village teacher tried to tempt her, but Bertha did not waver. Later, the teacher didn't dare to look her in the eye. Everyone praised her character.

Like Bertha, her husband Samuel was also of good character. He was patient, serious, and gentle. However, Bertha's mother-in-law became unhappy with her son's marriage. She would grumble as she moved around the house, "By marrying her, I have ruined my entire household. We are

doomed." Even when Bertha fell ill, she couldn't rest. As soon as she lay down on the bed, her mother-in-law would start nagging, "I brought a daughter-in-law who has destroyed our home, and now look, she doesn't get out of bed. All the work falls on my head. Who knows how long she wants to lie down! In our time, things weren't like this. If we had done this, would we be seeing such days?"

Poor Bertha tried everything to please her in-laws but couldn't. Samuel was a simple young man. He started to feel disheartened by the situation at home. Hearing his mother's words, he would cry silently. Finally, about two months after the wedding, Samuel took to his bed and never got up again. There is no cure for worry.

A lot of money was spent on his treatment, but one day, around the time the rooster crowed, Samuel departed for a place from which no one returns. The light in his eyes went out, and his limbs became lifeless. Bertha cried, sobbed uncontrollably. For two or three days, she didn't even touch food or water.

Bertha's mother-in-law also cried. She wailed, screamed, and thundered with grief. She beat her head and lamented, "I ruined your marriage, my son... What planetary alignment did you fall under? Was the whole world on fire for you that you married her? You brought someone else's daughter and sister here and left us." There is a limit to endurance. Even after enduring all the sorrows, Bertha wanted to serve her in-laws. But she became worn out by the taunts, insults, and hardships. She spent nine months in this state at

her in-laws' house. When the pain became unbearable, she returned to her parents' home one day under the pretext of going to the market.

Her parents' financial situation was not good. There was nothing in the house. No one would lend them money because they were not in a position to repay. Still, Bertha began to forget her sorrow under her mother's care. She would talk to her friends in the village and laugh. Gradually, she started to free herself from her grief. But sometimes, when she was alone and saw her married friends, she would remember her sorrow and shed tears. However, she found inspiration to start a new life in the shade of her mother's love. Although she prayed to God for strength to protect her character, she was still young, and spring had just arrived in her life. Sometimes, looking at the weather, flowers, birds, and the sky, an intense desire for companionship would awaken in her heart, and she would become agitated and cry. Her mother's words would also make her anxious.

Sometimes, lying in bed at night, her mother would say, "It would be good if you could hold someone's hand and go somewhere. How long will you sit alone?"

Hearing such words, Bertha would sink into despair. Darkness surrounded her. She would thrash around in the dark, but there was no one to console her. If only there were someone to show her the way! To be young and widowed! Even if it were a lie, someone could offer some comfort. A dam can hold back water for as long as it can, but when it can't handle it anymore, it breaks. Bertha's dam also broke.

On the other side of the Chadari hill is Tongri Tola. Dandu Paulus of Chadari Tola climbed the hill and sang the 'Padu.' Bertha heard him from the foothills. With great enthusiasm, Bertha responded by singing a song. Then, their meetings started taking place in the forest. No one knew when, where, or for how long they talked. But Bertha started taking great care in combing her hair, applying oil, and wearing clean clothes.

One day, Bertha returned home quite late from the forest. From then on, she started spending a lot of time getting ready at home.

Then, one morning, her family discovered that Bertha was not at home. Whispers spread among acquaintances in the village. Some said one thing, others said another. A few days later, it was heard that Dandu Paulus had also run away to Assam.

After learning everything, the village elders simply said, "If they both liked each other, they should have been allowed to be together. Bertha's family made a big mistake. They started demanding excessive dowry and gifts like she was a virgin girl. Is feasting more important than honor? They keep their mouths open, waiting for others to feed them. It's good that she rejected these false traditions and left."

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

झूमता-लहराता बाँस का पौधा,
(देखो) पहाड़ पर जन्म लिया।
हरियर-छरहर बाँस का पौधा,
(देखो) पहाड़ पर जन्म लिया।

Swaying and dancing bamboo plant,
(look) born on the mountain.
Green and slender bamboo plant,
(look) born on the mountain.

Pyara Kerketta Foundation

WhatsApp: +919262975571
mail: pkfbooks@jharkhandiakhra.in
fb: PyaraKerkettaFoundation
YouTube: JharkhandiBhashaAkhra
jharkhandiakhra.in | kharia.org

भाषा
₹ 20
9 789395 175678